9 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

जन सामान्य के बीच पठन अभिरुचि के विकास हेतु प्रतिबद्ध राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मानना है कि जिस तरह पाठकों को नई-नई पुस्तकों की आवश्यकता होती है, वैसे ही पुस्तकों को भी नए-नए लेखक मिलने चाहिए। युवाओं को अधिक से अधिक पठन-पाठन की दुनिया से जोड़ने के नए प्रयास के अंतर्गत नवलेखन माला प्रारंभ की गई है। इसके अंतर्गत 40 वर्ष से कम आयु के ऐसे लेखकों की रचनाओं को स्थान दिया गया है, जिनकी लेखन प्रतिभा को अभी तक अपेक्षाकृत कम पहचान मिल पाई है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

ISBN 978-81-237-7781-8

पहला संस्करण : 2016
पहली आवृत्ति : 2018 (*शक* 1940)

Bablu Kee Veerta *(Hindi Original)*

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नवलेखन/नेहरू बाल पुस्तकालय

बबलू की वीरता

निर्भय कुमार

चित्र : पार्थ सेनगुप्ता

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

बबलू न सिर्फ अपने घर में बल्कि सारे मुहल्ले में एक शरारती बच्चे के रूप में जाना जाता था। उसकी शरारतों की वजह से सभी उससे परेशान रहते थे। स्कूल में भी उसे सभी जानते थे। अक्सर उसकी स्कूल डायरी उसके किस्सों से भरी रहती थी, लेकिन पढ़ाई में वह किसी से कम नहीं था, हमेशा कक्षा में अव्वल आता था।

बबलू भले ही शरारती था, पर घर, आस-पड़ोस और स्कूल में सभी का लाड़ला भी था। चेहरे पर ऐसी मासूमियत होती कि जैसे उसे कुछ पता ही न हो। शरारत करने के बाद ऐसी भोली-सी शक्ल बनाता चाहे कोई जितना भी गुस्से में हो उसकी भोली सूरत देखकर उस पर तरस आ जाता था।

बबलू अपने मित्रों के साथ क्लास में और छुट्टी के बाद मुहल्ले में भी धमाल-चौकड़ी मचाता रहता था। अक्सर दोपहर को खेलते समय उनकी गेंद पड़ोसियों की छत पर जा गिरती तो उसे लाने की जिम्मेदारी भी बबलू की ही होती और वह इसे बखूबी निभाता था। वह खेल-कूद में और दौड़ में भी सबसे आगे रहता था।

घर में वह सबका लाडला था, खासकर दादा-दादी और अपनी बुआ का। किसी भी नई चीज की माँग वह हमेशा दादा-दादी या बुआ के जरिए अपने मम्मी-पापा तक पहुँचाता, और अक्सर सफल भी होता था। कई बार घर के गेजेट्स जैसे–मोबाइल, टी.वी., लेपटॉप और दूसरे घरेलू उपकरणों को बिना किसी की इजाज़त से प्रयोग में लाने की वजह से बबलू की मार खाने की नौबत आ जाती थी। हमेशा की तरह बुआ ही उसकी ढाल बनती थी। वैसे दादा-दादी का भी वह कम लाडला नहीं था। जब कभी पापा से मार पड़ती तो दादा जी की भी आँखें भर आती थीं पर वे कुछ कहते नहीं थे। जानते थे कि बबलू को समझाने की ज़रूरत है।
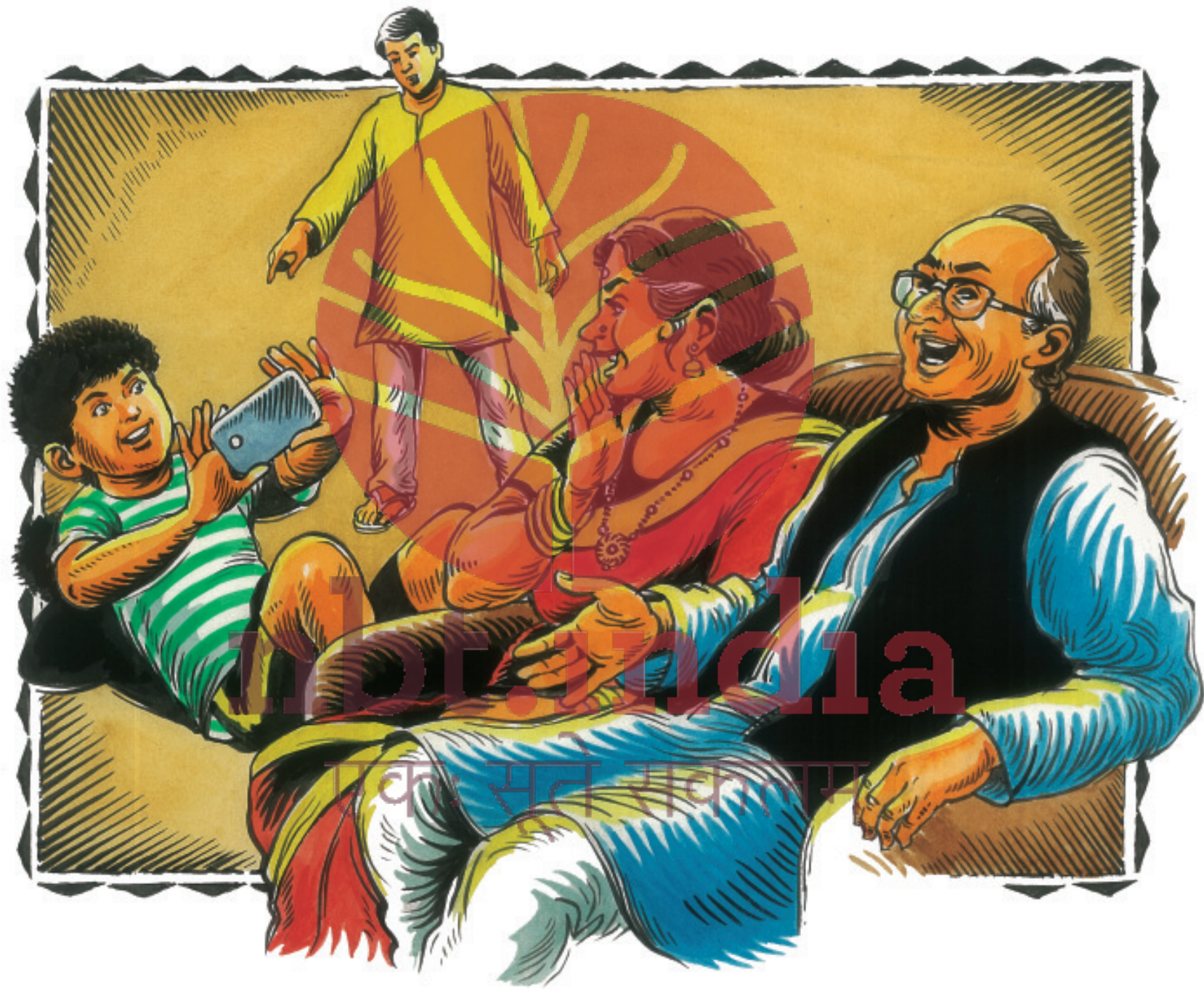
बबलू जब घर पर होता तो अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग भी बखूबी करता था। कई बार तो दादा जी को भी मोबाइल में से नंबर ढूँढ़ने में और डायल करने में मदद करता था, या दादी को पापा के लेपटॉप से पुरानी वीडियो और तस्वीरें दिखाता था। अपने बचपन की तस्वीरें देखता और खुश होता था। कई बार वह दादा-दादी की वीडियो भी बना लेता था। यह बात अलग है कि बाद में पापा से डाँट खानी पड़ती थी और बीच-बचाव के लिए हमेशा की तरह दादा जी होते थे।

बबलू अक्सर मम्मी-पापा के साथ छुट्टी वाले दिन पास के किसी मॉल में जाता तो बड़ी उत्सुकता से कई चीज़ों के बारे में पापा से पूछता और पापा कह देते कि तुम्हारी अभी इनको चलाने की उम्र नहीं है। बड़े हो जाओगे तो अपने-आप चलानी आ जाएगी। फिर भी उसकी उत्सुकता हमेशा बनी रहती थी। घर पर आकर भी वह इसकी चर्चा अपने मित्रों और दादा-दादी से करता और बुआ से अपने सवालों का समाधान करवाता।

उसके दादा जी रोज़ उसे रात में वीरों की कहानियाँ सुनाया करते थे। बबलू सुनते-सुनते बीच में कहता था कि मैं भी बड़ा होकर भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, या लाला लाजपत राय और मिलखा सिंह की तरह देश और परिवार का नाम रोशन करूँगा। दादा जी भी उसके उत्साह को हमेशा बढ़ाते रहते थे, और उसका असर उसमें दिखता भी था।

बबलू के घर के पास बड़ा-सा मैदान था, जिसमें बबलू अपने दोस्तों के साथ खेलता। उसे दौड़ने का भी काफी शौक था। वह अक्सर टी.वी. पर मिलखा सिंह फिल्म का विज्ञापन देखता तो दादा जी से उनके बारे में जानकारी लेता। दादा जी उसे सब बताते कि कैसे उन्होंने एक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी फौज का और देश का नाम रोशन किया।

वह दादा जी से कहता, ''मैं भी उनकी तरह बनूँगा'', दादा मुस्करा देते।

एक बार बबलू का परिवार किसी रिश्तेदार की शादी में शामिल होने के लिए जम्मू जा रहा था। सारा परिवार एक ही डिब्बे में था। ट्रेन शाम के 6.10 बजे चलती थी और सुबह 6 बजे जम्मू पहुँचाती थी। बबलू भी अपने दादा जी के पास ही ऊपर वाली लंबी सीट पर बैठा मोबाइल पर गेम खेल रहा था। ऐसे ही खेलते-खेलते उसकी आँख लग गई। करीब 5-6 घंटे वह सोता रहा, फिर अचानक उसे सूसू आ गया और वह टॉयलेट की ओर बढ़ा। जैसे ही वह टॉयलेट के पास पहुँचा, उसे अंदर से दो आदमियों की आवाज़ें सुनाई दीं। हालाँकि आवाज़ काफी धीमी थी, पर वह सुन सकता था। कोई एक आदमी दूसरे से कह रहा था :

"देख पप्पू, हमारा टारगेट अगला स्टेशन है और जो 45 मिनट में आने वाला है। हमें सारी तैयारी अभी से कर लेनी है। जैसे ही ट्रेन अमृतसर पहुँचेगी, वहाँ ट्रेन 10 मिनट ठहरती है, उस समय स्टेशन में ज्यादा हलचल नहीं होगी। हमें उन्हीं 10 मिनटों में ही सारे काम को अंजाम देना है।"

पप्पू : "मुन्ना भाई, आप चिंता मत करो। हमारी पूरी तैयारी हो चुकी है, आप मुझे बस इशारा कर देना, मैं चुपचाप काम को अंजाम दे दूँगा। हमारे टिकट जम्मू तक हैं, हम उस 10 मिनट में ही अपना काम करके वापस आ जाएँगे और किसी को कानों-कान खबर भी नहीं लगेगी।"

मुन्ना भाई : "मैं इस सेब की पेटी को यहीं टॉयलेट में रख देता हूँ, जैसे ही गाड़ी अमृतसर पहुँचेगी, तुम इसे यहाँ से उठाकर बाहर निकल जाना। वहाँ वेटिंग रूम में जब सभी सोए होंगे वहाँ तुम्हें बब्बू मिलेगा, वो जहाँ सोया होगा उसी जगह पर जाकर इस सेब की पेटी को रख देना। वहाँ ज्यादा समय मत लगाना। इसमें 10 मिनट का टाइमर लगाकर बब्बू के साथ वापस आ जाना। अपना मोबाइल ऑन ही रखना, मैं तुम्हें सारी बातें समझाता रहूँगा।"

पप्पू : "ठीक है भाई, मैं वैसा ही करूँगा।"

इधर बबलू उनकी बात बड़ी ध्यान से सुन रहा था। उसे कोई बड़ी साजिश होने का अंदेशा हो रहा था। गाड़ी कुछ ही मिनटों में अमृतसर स्टेशन पर पहुँचने वाली थी। उसके पास किसी को जगाने का समय नहीं था। तभी गाड़ी स्टेशन के आउटर में पहुँच गई यानी स्टेशन बस एक या दो मिनट में आने वाला था। वह सोच रहा था कि दादा जी को जगाऊँ और सारी बातें उन्हें बता दूँ पर वह पहले जिस काम से आया था उसे पूरा कर लूँ। वह साथ वाले टॉयलेट में जाकर अपना काम निपटा आया। कुछ ही पलों में साथ वाले टॉयलेट के खुलने की आवाज़ आई और उसने दो लोगों को बाहर निकलते देखा। वह चुपचाप दरवाजा खोलकर बाहर आया और जैसे नींद में हो, आँखें बंद किए उनके पास से निकल कर अपनी सीट के पास पहुँच गया। अभी भी सब लोग सो रहे थे। फिर उसे ध्यान आया कि उसके पास मोबाइल है। उसने मोबाइल में समय देखा– सुबह के 5.15 बज रहे थे। उसने डिब्बे के दूसरी तरफ अटेंडेंट की सीट की तरफ जाकर देखा, वहाँ कोई नहीं दिखा। बबलू ने वापस आकर सारी बातें दादा जी से करनी चाहीं पर वे भी सो रहे थे। उसकी आवाज़ का उन पर कोई असर नहीं हो रहा था।

सहसा उसे याद आया क्यों न मैं पापा के मोबाइल से पुलिस को कॉल करके उन दोनों के बारे में बता दूँ। उसने जल्दी से जल्दी 100 नंबर डायल कर दिया। तुरंत ही उसे किसी की अलसायी-सी आवाज़ सुनाई दी :

"हैलो! अमृतसर पुलिस जसबीर सिंह स्पीकिंग..."

बबलू : "अंकल, मैं दिल्ली से जम्मू जाने वाली 14003 गाड़ी के एस-4 से बबलू बोल रहा हूँ..."

जसबीर सिंह : "हाँ बेटे, बोलो क्या बात है?"

"अंकल, मैं दिल्ली से जम्मू जाने वाली 14003 गाड़ी के एस-4 से बबलू बोल रहा हूँ..."
"हैलो! अमृतसर पुलिस जसबीर सिंह स्पीकिंग..."

बबलू : ''अंकल, ये गाड़ी स्टेशन पहुँचने वाली है और इसमें दो आतंकवादी बैठे हैं जो अमृतसर स्टेशन में बम लगाने की बात कर रहे थे। वह दोनों अभी गाड़ी के रुकते ही वेटिंग रूम में बम लगाने वाले हैं। उनमें एक का नाम मुन्ना और दूसरे का पप्पू है। उन्होंने काली जैकेट पहनी है और थोड़ी-थोड़ी दाड़ी भी बढ़ाई हुई है।''

जसबीर सिंह : ''मैं अभी अपने ऊपर के अफसर को इसकी जानकारी देता हूँ और जो भी बन पाता है करता हूँ। आपने अपना नाम क्या बताया?''

बबलू : ''अंकल, मेरा नाम बबलू है और हम गाड़ी नं. 14003 के एस-4 में बैठे हैं।''

जसबीस सिंह : ''थैंक्स बेटा! तुम बहुत बहादुर हो। तुम उन पर नज़र रखना और हमें सूचित करते रहना।''

बबलू : ''ओके अंकल।''

थोड़ी ही देर बाद गाड़ी के प्लेटफॉर्म में दाखिल होने की आवाज़ें आने लगीं और गाड़ी एक झटके के साथ रुक गई। दोनों आतंकवादी अपना काम करने के लिए तैयार हो गए।

जैसे ही गाड़ी प्लेटफॉर्म पर पहुँची, मुन्ना भाई ने बैग उठाया और वेटिंग रूम की की तरफ बढ़ने लगा। वहीं दूसरा आतंकवादी ट्रेन में ही था। बबलू ने भी दादा जी को हिलाया और बोला कि मुझे टॉयलेट जाना है और वह भी नीचे उतर आया। बबलू जब फोन पर सारी बात बता रहा था तो वहाँ बैठा एक व्यक्ति सब कुछ सुन रहा था। असल में वह भी आतंकवादियों का ही साथी था। अब वह सोचने लगा कि इस लड़के को कैसे मसला जाए जिसकी वजह से सारे किए कराए पर पानी फिरने वाला था। बबलू जब दरवाजे की ओर जाने लगा तो उसने पास से गुजरते बबलू को पकड़कर अचानक उसकी कनपट्टी पर रिवाल्वर तानते हुए बोला, ''बस... बहुत हो गया चूहे-बिल्ली का खेल, बहुत होशियार हो गया बेटा। अब तू भी इन्हीं लोगों के साथ ही मरेगा...'' यह कहता हुआ वह बबलू को खींचता हुआ दरवाजे की ओर ले जाने लगा।

दादा जी भी घबरा गए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। जितनी देर में वे किसी को कुछ बताते तब तक आतंकी ने, बबलू के मुँह को रुमाल से बाँधा और उसे उठाकर गेट से नीचे उतर गया।

बबलू जोर-जोर से ''बचाओ-बचाओ'' चिल्ला रहा था, पर उसकी आवाज़ रुमाल के अंदर ही घुटी-घुटी-सी निकल रही थी। उस समय स्टेशन में कुछ ज्यादा हलचल नहीं थी। सभी यात्री तो सोए थे या वे उतरने की तैयारी कर रहे थे।

दादा जी को कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या करें? वे भी हड़बड़ी में उनके पीछे भागे। जल्दी-जल्दी दादा जी कम्पार्टमेंट से नीचे उतरे पर वे कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। ''अब क्या करूँ?'' यह सोचते हुए दादा जी आर.पी.एफ. के ऑफिस को ढूँढ़ने के लिए एक तरफ जाने लगे। इतने में ही उन्होंने कुछ जवानों को एस-4 की तरफ आते देखा, दादा जी भी तेज़ी से उनकी ओर जाने लगे। उनके पास पहुँचकर दादा जी ने कहा...

दादा जी : ''सर, मेरे पोते को कोई आतंकवादी उस तरफ ले गया है, जल्दी से कुछ करें...''

आर.पी.एफ. जवान : ''वह देखने में कैसा था? और क्या आप उसकी कोई पहचान बता सकते हैं?''

दादा जी : ''सर, उसने काली जैकेट पहनी हुई थी, और उसने मुँह पर कपड़ा बाँधा हुआ था।''

दादा जी भी उनके साथ ही हो लिए।

उधर पहला आतंकी अपना बैग वेटिंग रूम में रखकर वापस आ रहा था। उसने जब आर.पी.एफ. के जवान को उस ओर आते देखा तो वो थोड़ा चौकन्ना हो

गया। वह एक ओर स्टॉल के पास खड़ा हो गया और उन्हें जाते हुए देखता रहा। उसने मोबाइल पर दूसरे आतंकी का नंबर मिलाया और बोला–

"हैलो मुन्ना भाई कहाँ है तू?"

मुन्ना भाई : "पप्पू अपना प्लान बदल गया है। इस चूहे ने हमारी बातें सुन ली हैं। अब मैं इस छोकरे को लेकर बाहर गेट की ओर जा रहा हूँ और टिकट तेरे पास ही है न? तू बाहर गेट की तरफ आ जा।"

पप्पू : "मैं आ नहीं सकता क्योंकि दो पुलिस वाले गेट के पास तलाशी ले रहे हैं और शायद उन्हें शक भी हो गया है।"

अचानक बबलू ने मुन्ना भाई से अपना हाथ छुड़ा लिया और एक ओर भागने लगा। जब मुन्ना भाई ने अपना खेल बिगड़ते हुए देखा तो वह भी चुपके से गाड़ी की ओर भागने लगा। चूँकि गाड़ी चलने लगी थी, इधर दादा जी, पुलिस और बम निरोधक दस्ते के साथ वेटिंग रूम की ओर जा रहे थे। उन्हें पता था कि अगर बम फट गया तो बहुत नुकसान होगा। जब बबलू ने देखा कि मुन्ना भाई गाड़ी में चढ़ने की तैयारी में है तो वह भी उसके पीछे भागने लगा। गाड़ी ने भी रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी थी। मुन्ना ने देखा कि गाड़ी तेज़ होती जा रही है। उसे लगा अब गाड़ी पर चढ़ना मुश्किल है तो वह गाड़ी के साथ-साथ ही भागने लगा ताकि वह जल्दी से प्लेटफॉर्म पारकर बाहर निकल जाए। बबलू उसके इरादों को भाँप गया और वह भी तेज़ी से उसके पीछे भागने लगा। आज उसे मिलखा सिंह की याद आ रही थी। उसने जोर लगाकर भागना शुरू कर दिया। वह जल्द ही मुन्ना भाई के पीछे पहुँच गया, इतने में गाड़ी भी निकल गई। प्लेटफॉर्म भी खत्म हो गया, अब बबलू की हिम्मत बढ़ गई और उसने एक झटके से आगे जाते हुए मुन्ना को लंगड़ी मार दी। मुन्ना ताश के पत्तों की तरह भरभराते हुए रेलवे लाईन के किनारे गिर पड़ा। पीछे आ रहे पुलिसकर्मियों ने उसे पकड़ लिया।

उधर दादा जी ने बम निरोधक दस्ते के साथ बम को निरस्त करवाया और बड़ा हादसा होने से बचा लिया।

पुलिस के बड़े अधिकारियों ने बबलू की बहुत तारीफ की। "अगर बबलू ने समय से सूचना न दी होती तो एक बड़ा हादसा हो जाता।" उन्होंने बबलू का नाम बहादुरी का काम करने पर राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए मनोनीत किया। बबलू को 26 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बबलू आज दूसरों के लिए प्रेरणा बन गया है। उसके परिवार को उस पर गर्व है। बबलू ने अपने पिता जी का नाम रोशन कर दिया था। अगले दिन बबलू की वीरता की खबर सारे अखबारों में फोटो के साथ प्रकाशित हुई। दिन भर अलग-अलग टी.वी. चैनल्स पर उसकी वीरता के कारनामे आते रहे।

जे.जे. ऑफसेट प्रिंटर्स, नोएडा द्वारा मुद्रित